JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी की उन्नति में अनुवाद का योगदान

डॉ0 रेनू सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय देहरादून
renusinghpundir@yahoo.com

हिन्दी की उन्नति में अनुवाद का महत्वपूर्ण योगदान है। सर्वप्रथम हमें अनुवाद के विषय में जान लेना आवश्यक है कि अनुवाद क्या है? किसे कहते हैं? तथा हिन्दी भाषा की उन्नति में अनुवाद की क्या भूमिका रही? एक भाषा से दूसरी भाषा में सम्प्रेषण करने की कला को 'अनुवाद' कहते हैं। दूसरे शब्दों में पहले किसी भाषा में कही अथवा लिखी गई बात को अन्य भाषा में कहना अथवा लिखना 'अनुवाद' कहलाता है।

अनुवाद शब्द संस्कृत की 'वद' धातु में 'घञ' प्रत्यय तथा 'अनु' उपसर्ग लगने से सम्पन्न हुआ। 'वद्' धातु का अर्थ है–बोलना अथवा कहना। 'अनु' का अर्थ 'पश्चात्'। अतः अनुवाद का अर्थ हुआ–कही हुई बात को फिर से कहना। जिस भाषा से अनुवाद किया जाए 'स्रोतभाषा'(नतबम स्ंदहनहम) तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाए, उसे 'लक्ष्यभाषा'(त्मबमचजवत स्ंदहनहम) कहते हैं। अनुवाद की प्रक्रिया तो जटिल है ही उसको परिभाषित करना उतना ही जटिल है। भाषाविदों ने अनुवाद को परिभाषित करने की चेष्टा की है। जो निम्नांकित हैं–डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार–''एक भाषा की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर दूसरी भाषा में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सृजनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद कहा जाता है।''[1]

डॉ. स्टर्ट के मतानुसार–''अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की वह शाखा है, जिसका संबंध प्रतीकों के एक सुनिश्चित समुच्चय के दूसरे समुच्य अर्थ के अंतरण से है।''[2]

न्यूमार्क के शब्दों में–''अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।''[3] ए.एच. स्मिथ के शब्दानुसार–''अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना अनुवाद है।''[4] अतः यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद वास्तव में स्रोत भाषा (मूल भाषा) में अभिव्यक्त विचार वक्तव्य रचना अथवा सूचना साहित्य को यथासंभव मूल भावना के समानांतर बोध एवं सम्प्रेषण के धरातल पर लक्ष्य भाषा (जिसमें में अनुवाद, किया जाए) में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।

विश्व में अनेक भाषाएँ हैं। इनमें अधिकतर भाषाएँ ऐसी हैं जिनका साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक साहित्य समृद्ध है। किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह अनेक भाषाओं को सीखें और उनके ज्ञान भण्डार का लाभ प्राप्त करें। आज विकसित देशों का तकनीकी ज्ञान अत्यंत उन्नत और समृद्धशाली है। अनुवाद के द्वारा ही उसे किसी भी भाषा में उपलब्ध कराया जा सकता है। किन्तु इसके लिए एक श्रेष्ठ अनुवादक का होना आवश्यक है। अनुवादक को चाहिए कि वह मूल ग्रंथ के

विचार को सही–सही और हू–बू–हू रूपांतरित कर दे उसका लक्ष्य यह होना चाहिए कि मैं न तो कोई मौलिक बात लिख रहा हूँ और न ही कोई अनपेक्षित, अनावश्यक बात कर रहा हूँ। अनुवादक को, अपनी ओर से कुछ नहीं कहना होता तथापि उसे ऐसी मनोरम शैली में अनुवाद करना चाहिए कि पाठक को यह आभाष भी न हो कि वह किसी अनूदित कृति को पढ़ रहा है। जिस अनुवाद में मूल भावों का अंग–भंग हुआ हो या उसका विकृत अथवा अस्पष्ट रूप उपस्थित किया गया हो, वह कभी अच्छा अनुवाद नहीं कहा जा सकता। अनुवादक को अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय पारस्परिक शब्दों के लाने की आवश्यकता पड़ती है किन्तु इस संबंध में अनेक अनुवादकों ने अत्यंत असावधानी का परिचय दिया है। अंग्रेजी में ज्ञान विज्ञान के प्रसार का एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि इसमें शब्दों के स्वरूप बहुत पहले ही निर्धारित हो चुके थे और अर्थग्रहण करने में पाठकों को किसी प्रकार की दुविधा नहीं होती थी। उदाहरणार्थ अंग्रेजी का एक शब्द है–श्।इदवतउंसश् जिसका किसी पुस्तक में अनुवाद मिलता है–'अप्राकृत' शब्द किसी में असामान्य पाठकों को एक अर्थ व्यक्त करने वाले भिन्न–भिन्न शब्दों के कारण बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भारत सरकार ने विभिन्न शास्त्रों में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कराया है। अतः उनका ही प्रयोग करने पर हिन्दी में एकरूपता आ सकती है। इसके अलावा 'कोशों' की सहायता ली जा सकती है क्योंकि अनुवाद करना एक कला है। इस कला में दक्षता प्राप्त करने के लिए निरंतर अभ्यास और सच्ची लगन की आवश्यकता होती है। इसके अनुवाद को जहाँ तक संभव हो सरल और चुने हुए शब्दों का ही प्रयोग करें। अपनी ओर से कुछ घटाएँ बैठाएँ नहीं। समय–समय पर मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया जाए जो प्रसंगानुसार हो।

व्यक्ति को आयु, समय और साधनों की प्राप्ति सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक भाषा नहीं सीख सकता। ऐसी स्थिति में अनुवाद ही वह माध्यम है जिसके द्वारा सभी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अतः हिन्दी के संदर्भ में इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। हिन्दी अनुवाद के माध्यम से अत्यंत प्राचीन काल में भी विभिन्न भाषा–भाषी समाजों के बीच संपर्क होता रहा है। विश्व सभ्यताओं के विकासक्रम में हिन्दी अनुवाद का अमूल्य योगदान रहा है। यदि अनुवाद न होता तो विभिन्न सभ्यताएँ और समाज एक–दूसरे से अलग–थलग ही पड़े रहते हैं।

हिन्दी का प्रत्यक्ष संबंध संस्कृत से है और भारत की प्रायः सभी भाषाओं का मातृत्व संबंध है, संस्कृत से। अतः सभी भारतीय भाषाएँ हिन्दी की बहनें हैं, जो अपनी अंतर्रात्मा को एक–दूसरे के निकट लाने का काम करती हैं, क्योंकि भारत के सभी भाषा–भाषियों का इतिहास एक है, सभी के आदर्श पुरूष और देवी–देव या भगवान समान हैं, अतः हिन्दी की या अन्य भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद की भूमिका स्वाभाविक रही है। हिन्दी की उन्नति में अनुवाद की भूमिका राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करने वाली है।

भारत में हिन्दी वर्तमान में राष्ट्रभाषा है, परन्तु इसके महत्व को सर्वप्रथम ब्रह्म समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय ने पहचाना था, जब ईसाई मिशनरियों ने भारत के प्राचीन साहित्य परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों की कटु आलोचना शुरू कर दी थी। उन्होंने भी हिन्दी पत्रकारिता साहित्य में अपने कदम रखे और उसके बाद कलकत्ते से ही हिन्दी के समाचार पत्रों के प्रकाशन का क्रम आरंभ हुआ। इसका अभिप्राय यह है कि उस समय देश में यातायात सुचारू और सुलभ साधनों का अभाव था। हिन्दी भाषा को बंगाल में आदर प्राप्त था। तब भी हिन्दी में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका थी।[5]

भारत कई वर्षों तक मुसलमान शासन (मुगलों) के अधीन रहा। तब संस्कृत ही वह सांस्कृतिक धरोहर थी, जिसके बल पर उसने इस्लाम के उस प्रयत्न को असफल कर दिया था। अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका ने ही भारत की इस सांस्कृतिक धरोहर से पाश्चात्य जगत को परिचित तो कराया ही उसकी चकाचौंध से वह स्तब्ध सा हो उठा। कुछ राजनैतिक कारणों से भी हिन्दी भाषा में विदेशी साहित्य का अनुवाद हुआ। ज्ञान की व्यापकता को इस कार्य ने बहुत विस्तार प्रदान किया। इसी कारण हिन्दी के विकास में इसका योगदान रहा। हिन्दी भारत के एक बहुत बड़े भू–भाग की भाषा थी, भले ही उसकी बोलियां विविध थीं, परन्तु हिन्दी में नये साहित्य सृजन ने, जिसमें अनुवाद कार्य शामिल था एक समान रूप दिया। अरबी और फारसी पर हिन्दी के प्रभाव से भारत में उर्दू का जन्म हुआ था, जो पहले 'हिन्दी' पुकारी जाती थी, बाद में फारसी लिपि में लिखी जाने के कारण इसे 'उर्दू' नाम दिया गया। 'हिन्दी' के इस फारसी रूप में भी अनुवाद कार्य चलता रहा। संस्कृत साहित्य का उर्दू और फारसी तथा अरबी में अनुवाद हुआ और फारसी साहित्य का 'हिन्दी' नामधारी काल में ही हिन्दी में अनुवाद हुआ था। अतः हिन्दी के समृद्ध होने का मार्ग अनुवाद माध्यम ने काफी पहले ही प्रशस्त कर दिया था।

बहुत समय पहले से ही एक भाषा के साहित्य की प्रसिद्ध कृतियों का अनुवाद दूसरी भाषाओं में होता रहा। इस प्रकार ज्ञान–विज्ञान की उन्नति में बहुत सहायता मिलती रही। संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध ग्रंथों का अनुवाद लैटिन तथा अन्य भाषाओं में ईसा की प्रारंभिक शताब्दी में हो चुका था। इन ग्रंथों में 'पंचतंत्र' का उल्लेख किया जा सकता है। जिसका अनुवाद विश्व की अनेक प्राचीन और अर्वाचीन भाषाओं में हो चुका है। विश्व में कथा साहित्य के प्रसार का जो श्रेय भारत को दिया जाता है, उसका स्रोत पंचतंत्र का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद ही है। अनुवाद को जिसे 17वीं शताब्दी के मुगल शहजादे दाराशिकोह ने किया, लैटिन में रूपांतरित किया गया, जिसे पढ़कर जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक शोपेहर ने कहा था कि समस्त संसार में उपनिषदों के शांतिप्रदायक अध्ययन जैसा दूसरा कोई अध्ययन नहीं है। 'अभिज्ञानशाकुंतलम' का अंग्रेजी अनुवाद जिसे विलियम जोन्स ने किया था, पढ़कर जर्मन भाषा के प्रसिद्ध कवि गेटे ने अपनी प्रशंसा के भाव व्यक्त किए थे। उससे सहृदयों को कालीदास की इस अनुपम नाट्य कृति के रसास्वादन में बहुत सहायता मिली। 18वीं शताब्दी से भारतीय साहित्य के अनमोल रत्नों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद का जो सिलसिला प्रारंभ हुआ, उसका महत्व साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, वरन् पाश्चात्य और भारतीय संस्कृतियों से परस्पर आदान–प्रदान की दृष्टि से भी बहुत महत्व रखता है।

हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद ने अपने साहित्य का सृजन उर्दू भाषा में किया था। साहित्यविदों और साहित्य प्रेमियों ने उनके कला संसार को जानने और समझने के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया जिनमें रविन्द्रनाथ टैगोर, शरतचन्द्र, विमल मित्रा, बंकिमचंद्र आदि के साहित्य के साथ भी ऐसा ही हो रहा है। लोगों ने पहले बांग्ला–भाषा का शिक्षण प्राप्त कर बाद में उनके साहित्य का हिन्दी में भाषानुवाद किया, जो बांग्ला भाषा से कहीं अधिक हिन्दी भाषा में लोकप्रिय है।

अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं से हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। अंग्रेजी का महत्व अनूदित दृष्टि से बेजोड़ है। विश्व साहित्य की कोई प्रसिद्ध कृति ही ऐसी होगी, जिसका प्रामाणिक अनुवाद अंग्रेजी में न मिल सके। हिन्दी में भी अनूदित साहित्य का अच्छा भण्डारण है। हिन्दी में पाश्चात्य साहित्य के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथों के अलावा मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगू, मलयालम, बांग्ला आदि साहित्यों की कुछ कृतियों के अनुवाद भी आ चुके हैं। हिन्दी

का अनूदित साहित्य लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की आवश्यकता स्वयं सिद्ध है। ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न दिशाओं में अंग्रेजी के जो प्रामाणिक ग्रंथ मिलते हैं, उन्हें हिन्दी में उपलब्ध करके हम अपनी भाषा को समृद्ध कर सकते हैं। इस कार्य में अनुवाद हमारी बहुत सहायता कर सकता है।

सरकारी गैर सरकारी पत्र व्यवहार के संदर्भ में भी अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। जो प्रशासनिक पत्र व्यवहार अंग्रेजी भाषा में होते हैं, उनमें कई ऐसे शब्द होते हैं, जो संकेत प्रधान होते हैं। ये सामान्य व्याकरणिक नियमों द्वारा अनुशासित नहीं होते। इनमें किसी तरह का कोई भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। कोई भी अनुवादक इन सांकेतिक शब्दों के साथ किसी प्रकार का बल प्रयोग भी नहीं कर सकता। इस प्रकार इसके लिए वहीं कुछ कर सकता है, जो इनके प्रामाणिक अनुवाद करने में पूर्ण ज्ञान रखता है।

देश की स्वतंत्रता से पूर्व तो सारे शासकीय कार्य अंग्रेजी भाषा में ही होते थे। स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत सरकार ने शासकीय प्रारूपणों का प्रयोग हिन्दी में करने की आजादी तो दे दी किन्तु उसका मौलिक प्रयोग नहीं बन सका। अंग्रेजी का अनुवाद हिन्दी में होने लगा, जो अब तक उसी तरह से चल रहा है। आज तो जनसंचार के माध्यमों द्वारा भी अनुवाद सुलभ है जिनमें रेडियों, दूरदर्शन तथा टेलीफोन टेलीग्राफ, फैक्स में भी हिन्दी अनुवाद सुलभ है। फिल्मों में अनेक भाषाओं की फिल्मों का अनुवाद हिन्दी में हो रहा है, उदाहरणार्थ– 'जुरासिक पार्क', टाइटैनिक, जेम्स बाण्ड–007 इत्यादि। केबल और ई–मेल द्वारा कई भाषाओं के कार्यक्रम हिन्दी में अनूदित होकर प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ई–मेल ने तो संपूर्ण विश्व को हिन्दी से जोड़ने का काम किया है।

अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी की उन्नति में अनुवाद का योगदान अविस्मर्णीय है।

संदर्भ सूची :

1. सुजीत भारद्वाज, प्रयोजनमूलक हिन्दी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पृ. 75
2. वही, पृ. 75
3. वही, पृ. 75
4. वही, पृ. 75
5. डॉ. देवेन्द्र शुक्ल, प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृ. 198